'विदेह' २६३ म अंक ०१ दिसम्बर २०१८ (वर्ष ११ मास १३२ अंक २६३)

ऐ अंकमे अछि:-

वापसी (एकांकी संग्रह)

(राजदेव मण्डल)

पल्लवी प्रकाशन

वापसी

ए कां की सं च य न

राजदेव मण्डल

वापसी

राजदेव मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
निर्मली

ISBN : 978-93-88421-88-1

दाम : ₹ 50/-

पहिल संस्करण : 2018

प्रकाशक : पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं. 06, निर्मली, जिला- सुपौल,
बिहार : 847452

वेबसाइट : http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल : pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल : 8539043668, 9931654742

प्रिन्ट : मानव आर्ट, निर्मली (सुपौल)
आवरण : श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) पिन : 847452

WAAPSI
Collection of One-Act Play by Sh. Rajdeo Mandal.

समर्पण

साहित्यसँ सिनेह रखनिहार
सुधीजनकेँ सादर समर्पित।

पात्र परिचय-

1. **पतिलाल-** (दहेजक लोभी बेकती)
2. **लुतीचन-** (पतिलालक ग्रामीण)
3. **कंतलाल-** (पतिलालक बेटा)
4. **चन्देसर-** (पतिलालक समधी)
5. **फूलोदाय-** (कंतलालक पत्नी आ चन्देसरक बेटी)
6. **सुखबा-** (चन्देसरक बेटा)
7. **घोंघाय-** (चन्देसरक ग्रामीण)
8. **चटपटिया-** (चन्देसरक ग्रामीण)

अंक प्रारम्भ

प्रथम दृश्य

स्थान- पतिलालक दुआरि।

समय- दिन।

लुतीचनक प्रवेश

लुतीचन- (जोरसँ आवाज दैत अछि।)
काकाऽ ऽ ऽ यौ काकाऽ ऽ। अँगनामे छिऐ यौ। एने आऊ कनी।
(पतिलाल भीतरसँ निकलैत अछि।)

पतिलाल- किए एते जोरसँ हल्ला करै छँह। बाज ने की बात छिऐ।

लुतीचन- काल्हि साँझमे हाट गेल छेलौं। अहाँ समधीक भाय भेटल छल। समधी बेमार अछि। ओ कहलक भेँट करबाक लेल।

पतिलाल- धुर, की भेँट करबै। बियाहमे जे दहेजक रूपैआ बाँकी रहि गेलै से अखनी तक नहि देलक। दू गोरेक सोझामे गछौटी केने छल।

लुतीचन- छोड़ि दहक आब ओइ गप्पकेँ। कहबियो छै- भेल बिआह आब करब की।

पतिलाल- केना छोड़ि देबइ। ऐ कारणे तँ अँगनामे माए बेटा दुनू मिलि कऽ हमरासँ लड़ैत रहैए।

लुतीचन- ओतए जेबहक तब ने कोनो बातो हेतह।

पतिलाल- तहूँ चल ने लुतीचन। दुनू गोरे रहबै तँ गप्पो चलबैमे ठीक रहतै।

लुतीचन- ठीके छै। हमहूँ जाएब। ओनएसँ बजारक काजो केने आएब। अहाँ आऊ हम तैयार रहब।

❑

(कहैत लुतीचन प्रस्थान करैत अछि।)

सीन ड्राप।

दोसर दृश्य-

समय- दिन

स्थान- (पतिलालक समधी–चन्देसरक घर।

(पतिलाल आ लुतीचनक प्रवेश)

लुतीचन- दुआरिपर तँ कोय नहि अछि।
(अँगनासँ कनबाक स्वर आबि रहल अछि।)

पतिलाल- (कान लगा कऽ सुनैत अछि)
यौ समधीजी छी यौ। अँगनासँ निकलू ने। हम दुआरिपर ठाढ़ छी।
(कनबाक स्वर मद्धिम भऽ जाइत अछि। चन्देसरक जेठ बेटा सुखबा आँखि पोछैत निकलैत अछि।)

सुखबा- आऊ बाबू, अँगने आऊ।
बाबूजी नहि रहला। चलि गेला स्वर्ग। आब हुनकासँ भेँट नहि होएत।

पतिलाल- ओह! जुलुम भऽ गेलइ। की भेल छेलै?

सुखबा- (कनैत स्वरमे) किछो नहि भेल रहै। दू-तीन दिनसँ बोखार लगै छेलै। आइ एकाएक छातीमे दरद उठलै

आ जाबे सचेत भऽ कऽ असपताल लऽ जैतौं ताबे पराने छुटि गेलइ।

पतिलाल- अच्छा सबुर करह। कनलासँ किछ नहि हेतह। की करबहक, भगवानकेँ इएह मंजूर छेलइ। होनीकेँ कियो नहि रोकि सकैत अछि। धरतीपर एतबे दिनक दाना-पानी लिखल छेलैन। धीरज तँ बान्है पड़तह।

सुखबा- हँ, से तँ ठीके। आब दोसर उपाये कोन छइ। मुदा पहिनेसँ एहेन बातक कनियोँ शंका नहि छेलइ।

पतिलाल- हौ, एहेन मृत्यु तँ सभसँ नीक। किनको सेवो-टहलक अवसर नहि भेटलैन।

सुखबा- ई तँ दोसर बात भेल बाबू। मुदा अचानक जे कोनो भरिगर भार कपारपर पड़ि जाइ छै तँ...।

पतिलाल- शान्तिसँ काज करबहक तँ सब चीजक रास्ता लगि जेतइ।

सुखबा- चलू बाबू। अहाँ सभ लहाश लग बैसब। ओइठाम कियो नइ छइ। दाह-संस्कारक लेल हमरा कतेक चीजक इन्तिजाम करए जाए पड़त।

पतिलाल- चलह।

(सुखबा आगू आ पाछूसँ पतिलाल आर लुतीचन विदा होइत अछि।)

❑

सीन ड्रॉप।

दृश्य- तीन

समय- दिन।

स्थान- चन्देसरक घरक एक भाग

(चौकीपर चन्देसरक लहाश अछि। एकटा औरतिया ओइठाम बैसल अछि। सुखबा, पतिलाल आ लुतीचनक प्रवेश।
(पतिलालकेँ देखते औरतिया नोर पोछैत विदा भऽ जाइत अछि।)

सुखबा- अहाँ सभ अहीठाम बैसू आ हमरा लकड़ीक इन्तिजाम करैले जाए दिअ। (कहैत विदा भऽ जाइत अछि। पतिलाल माथपर हाथ दऽ एक कातमे बैस जाइत अछि।)

लुतीचन- मन किएक दुखित करै छी। बुढ़ छेलैथ नीके भेलैन जे मरि गेला।

पतिलाल- से तँ ठीके कहै छी। मुदा पत्नी आ बेटाकेँ की जवाब देबै? ओ तँ हमरे दिस हुड़कान मारै छइ।

लुतीचन- की हुड़कान मारैए?

पतिलाल- धुर तूँ की बुझबीही। गुड़क मारि तँ धोकड़े बुझै छइ। पत्नी कहैत रहैए जे लोककेँ केते दहेज देलकै। मुदा अहाँकेँ ठकि लेल। गछलो टका नहि देलक। अहाँ बुड़बक छी। मुरुख छी।

लुतीचन- अच्छा, सुनू एकटा बात कहै छी।

पतिलाल- कह ने रौ। कोनो उपाय लगा ने।

लुतीचन- समधीक कान दिस देखै छिऐ।

(लहाश दिस इशारा करैत)

दुनू कानमे सोनाक कनौसी अछि निकालि कऽ जेबीमे रखि लिअ। कियो ऐठाम नहि छै जे देखबो करत।

पतिलाल- बात तँ तूँ ठीके कहै छँह मुदा बुझि जेतौ तब की हएत?

लुतीचन- ऐठाम आइ केतेक लोक एतै आ जेतइ। ओइमे की पता चलतै जे के लेलक। आ जँ बेसी डर बुझाइत अछि तँ अपना गामे दिस चलि देबइ।

पतिलाल- ठीके कहै छँह। इएह अन्तिम उपाय अछि।

(उठि कऽ समधीक लहाश लग जाइत अछि।)

❑

सीन ड्रॉप।

दृश्य- चारि

समय- दिन।
स्थान- चौबटिया।

(पतिलाल आ लुतीचन लफड़ल चौबटिया लग पहुँच गेल अछि। पाछूसँ सुखबा अपना दूटा गौंआँ घोंघाय आ चटपटियाक संगे प्रवेश करैत अछि।)

सुखबा- (हल्ला करैत) यौ बाबूऽऽऽ। कनी ठाढ़ रहू।
(पतिलाल आ लुतीचन ठाढ़ होइत अछि)

घोंघाय- (हकमैत) यौ किएक भागल जाइ छी?

पतिलाल- भागल कहाँ जाइ छी। हम तँ गाम जाइ छेलौं।

घोंघाय- गाम किएक जाइ छिऐ?

पतिलाल- जाइ छी गामपर सँ बेटा-पुतौहकेँ भेज देबइ। ओ सभ एता तँ दाह-संस्कारमे भागो लेता।

चटपटिया- अहाँक घरपर समाद भेज देने छी। ओ सभ अबिते हेता। अहाँ परेशान नहि होउ।

पतिलाल- परेशान केना नहि हएब। दूटा माल-जाल अछि। घर-अँगनाकेँ सुनहट छोड़नाय नीक बात हेतइ। हम जाइ छी।

चटपटिया- एकटा गप्प सुनि लिअ समधीजी तब जाएब।

पतिलाल- जल्दी कहू।

चटपटिया- केना कहब, कहितो अनोन सन लगैत अछि आ नहि कहब सेहो नहि बनतै।

पतिलाल- सोझ मुहेँ कहू ने। जे कहैक अछि।

चटपटिया- देखियौ, अहाँ ई नहि सोचबै जे कोनो आरोप लगबै छी। ओना, कर-कुटमैतीमे एहेन बात बाजब अनुचिते होइ छइ। मुदा जँ नहि बाजी तँ आरो अनुचित। सन्देह आ शंकाकेँ साफ कऽ ली, सएह उत्तम होइ छइ।

घोंघाय- तूँ तँ तेतेक गप्पकेँ घुमा-फिरी करै छहक जे एहिसँ नीक हमरा बाजए दएह।

पतिला- हँ-हँ, अहीं बाजू।

घोंघाय- यौ समधीजी, लहाश लग अहीं बैसल छेलौं। तखनी ओइठाम कियो नहि छेलै। सोनाक कनौसी कानमे नहि छइ। अँगनाक स्त्रीगण सभ बजैए जे समधीक कानक कानौसी अहीं निकालि लेलिऐ।
(पतिलाल चुप्पी साधने ठाढ़ अछि।)

चटपटिया- चुप रहने काज नहि चलत समधीजी। सोनाक कनौसी छेलै तँए पुछै छी। अहाँकेँ एना नहि करबाक चाही।

पतिलाल- ठीके कहै छी। हमरा एना नहि करबाक चाही। मुदा समधीजी जे हमरा संगे केलक से हुनका करबाक चाही?
(पतिलालक बेटा कंतलाल आ पुतौह फूलोदाय प्रवेश करैत अछि।)

चटपटिया- ओ तँ बेचारे स्वर्ग चलि गेला। ओ अहाँ संगे की केने छला?

पतिलाल- अखनी तक दहेजक रूपैआ जे गछौटी केने छल से बाँकीए अछि। ओना, अपने तँ दुनियेँसँ चलि गेला।

मुदा ओ रूपैआ हमरा के देत?

चटपटिया- ओ! तँए ओकरा बदलामे कानक कनौसी घींच लेलिऐ।

पतिलाल- तँ की करितौं। पत्नी आ बेटा कहैत अछि जे अहाँ मुरुख छी। बिआहमे ठका गेलौं। अहाँ मनुख नहि छी।

कंतलाल- बाबूजी, अहाँ एतेक नीचा गिर जाएब से पता नहि छल।

फूलोदाय- (पति कंतलाल दिस तकैत)
अहाँक बाबूजी पकिया आदमी अछि। जीयतक तँ बाते छोड़ू, मुइलोसँ सूइद समेत तसील लैत अछि।

कंतलाल- हुनकर सेनाक कनौसी अपास कऽ दियौ। आब ऐ विषयमे हम कहियो नहि बजब।

पतिलाल- ठीके छै, जखन तोरो वएह विचार छौ तँ वापस कऽ दइ छिऐ।
(पतिलाल सोनाक कनौसी सुखबाक हाथमे दैत अछि।)

घोंघाय- अच्छा, आब सब गप्प छोड़ू। चलै चलू, दाह संस्कारमे।

पतिलाल- आब कोन मुहेँ ओइठाम जाएब। सोना तँ हम वापस कऽ देलौं। मुदा हमर प्रतिष्ठाक वापसी तँ नहि भऽ सकैत अछि।

फूलोदाय- चिन्ता नहि करू बाबूजी। अहाँ चलू। हमर घर-पलिवार छिऐ। हम सब बात सम्हारि लेबइ।

कंतलाल- बाबूजी, अहाँ तँ घिनेबे केलौं। सासुरमे हमरो घिना देलौं।

पतिलाल- देखियौ, जेकरा लेल कानलौं, तेकरा आँखिमे नोरे नहि। आब ऐठाम हम ठाढ़ नहि रहि सकै छी।
(तेजीसँ प्रस्थान)

❑

सीन ड्रॉप।

सम्बन्ध

(एकांकी नाटक)

पात्र-

1. लखपतिया : धनक लोभी बेकती
2. जगु बौकू : लखपतियाक भाए
3. दुखनी दाय : लखपतियाक माए
4. दुलारी (छिटकीवाली) : लखपतियाक पत्नी
5. लेटरू काका : लखपतियाक ग्रामीण
6. भुनेसर : लखपतियाक ग्रामीण
7. कमलेश : लखपतियाक ग्रामीण
8. फुलचन : लखपतियाक ग्रामीण

   (किछु ग्रामीण आर चाहबला दोकानदार)

पहिल दृश्य-

समय भिनसर

(लखपतिया दरबज्जापर बैसल अछि। आगूसँ बाट धेने फुलचन जा रहल अछि।)

लखपतिया- (कनी जोरसँ सोर पाड़ैत अछि) यौ फुलचन भायऽऽऽ। एने आउ।। एगो गप्प छइ।

फुलचन- (घुमि कऽ लगमे अबैत अछि।) हँ, कहू की बात?

लखपतिया- सुनै छी जे अहाँ अपना भाएकेँ हिस्सा नइ दऽ रहल छिऐ। सुनू- भाय-भैयारी महींसी सिंग, जखने जनमल तखने भिन्न। भाइक हिस्सा तँ दिअ पड़त।

फुलचन- ओहिना होइ छै आधा हिस्सा यौ। कठ काटि कऽ सम्पैत बँचौने छिऐ। ओहिना बँचल छै, धन-सम्पैत। फोकटेमे आधा हिस्सा लेतै। काज करै बेरमे बबुआनी केने घुरै छेलइ।

लखपतिया- भाइक हिस्सा मारि कऽ खेबै तँ सभ कुछ स्वाहा भऽ जाएत।

फुलचन- देबै हिस्सा। कहियौ, पहिने महाजनक सभटा पुरना करजा आपस कऽ देतै तब आधा हिस्सा लेत।

लखपतिया- ओ कहै छल जे अहाँ अपना सार आ पत्नीक बेमारीमे सभटा करजा उठौने छिऐ, तखन तँ ओइ करजाक भार अहाँक उठबए पड़त ने।

फुलचन- हे बेसी लबर-लबर नहि करू। अहाँक ओकरासँ दोस्ती अछि तँए ओकरा दिससँ बजै छिऐ। खुलि कऽ खेलाउ ने।

लखपतिया- ई मिलानबला गप्प नहि भेल। एनामे दुनू भाँइमे लड़ाइ-झगड़ा भऽ जाएत।

फुलचन- हमरासँ लड़ाइ करत। हमरा सोझामे एहेन गप्प बजत तँ सारकेँ खून कऽ देबइ। देखै छी- जे के आबै छै, ओकरा दिससँ। जे एतै तेकरो छोड़बै नहि।

लखपतिया- ईमान-धरम सभ खतम कऽ देबइ?

फुलचन- इह, हमरा ईमान-धरम सिखबै छैथ। अपना भाइकेँ दशा बिगाड़ि कऽ भगा देलखिन से मन नहि छैन।

(फुलचन फानि कऽ विदा भऽ जाइत अछि।)

❑

सीन ड्रॉप।

दोसर दृश्य-

स्थान : गामक चौबटियापर चाहक दोकान।

(भुनेसर, कमलेश, फुलचन, आर किछु ग्रामीण सभ चाहक दोकानपर बैसल अछि।)

(लेटरू काका संगे बौकू अबैत अछि।)

लेटरू काका- (बौकूकेँ हाथसँ झोरा लैत)
अपना गामपर आबि गेलौं। अहाँ पियासल छी, पहिने कलपर जा कऽ पानि पी लिअ, तब घर दिस जाएब।
(बौकू पानि पिबैले जाइत अछि।)

भुनसेर- लेटरू काका, ओ के छी यौ?

लेटरू काका- नहि चिन्हलहक। लखपतियाक भाए बौकू छिऐ।

(लखपतियाक नाम सुनिते फुलचन लगमे आबि ठाढ़ भऽ जाइत अछि।)

भुनेसर- एकर तँ चेहरे दोसर रंग भऽ गेलइ।

लेटरू काका- हँ, कहै छैलै जे दू बरिस पहिने बस एक्सीडेन्टमे घायल भऽ गेल छल। मुहेंमे बेसी चोट लगलै तँए एना भऽ गेलइ।

भुनेसर- ई तँ आठ-दस बरिस पहिने निपत्ता भऽ गेल छेलए। फेर केना आबि गेल।

कमलेश- अहाँकेँ केतए भेँट भऽ गेल?

लेटरू काका- भोरमे दूध बेच कऽ आबै छेलौं। ई टीसन लग रस्ता कातमे ठाढ़ भऽ कऽ अपना गाम दिस ताकै छल। हमरा देखते पएर छानि कऽ कानए लगल। पहिने तँ हमहूँ अकबका गेलौं। मुदा पैछला सभ गप्प कहलक तब चिन्ह गेलिऐ।

कमलेश- ई बौक तँ नहि अछि। फेर एकरा बौकू किए कहै छिऐ?

लेटरू काका- नाम तँ एकर जगू छिऐ। मुदा ई बचपनेसँ कनी मतिछिन्नू जकाँ करै छेलै, जे काज करै से करिते रहि जाइ। नहि कोनो काज रहै तँ चुप्पी लाधि कऽ बैस

जाए आ घन्टो बजबे ने करए, तँए बौकू नाम पड़ि गेलइ। अहाँ बाहरसँ आएल छी तँए नहि बुझल अछि।

(हाथ-मुँह पोछैत बौकू आबैत अछि। बेरा-बेरी सभकेँ गोड़ लागि, कल जोड़ने ठाढ़ होइत अछि।)

बौकू- यौ काका, यौ भैया, अहाँ सभक बड़ मन पड़ै छल। माइक मन पड़िते असगरमे खूब कानै छेलौं। नहि रहल गेल तँ अहाँ सभक दरशन करैले चलि एलौं।

कमलेश- हौ एतेक दिनसँ केतए छेलहक?

बौकू- भेट गेल छला एक सन्त भगवान। हुनके सेवा-टहलमे समए काटए लगलौं।

फुलचन- आब ऐठाम रहबहक आकि फेर चलि जेबहक?

बौकू- एलौं तँ भैयासँ भेँट करैले। ओ जँ राखि लेता तँ रहि जाएब।

फुलचन- हँ कहै तँ छहक ठीके। ओ तँ बुझहक रावणे छिआ। समाजोमे सभसँ अलगे रहै छैथ। केकरो बात सुनत थोड़े।

भुनेसर- ओइ बेर रूपैआ चोरौने रहै ओकरे सार आ मारि-पीट कऽ बौकाकेँ गामसँ भगा देलकै। लोक कहैत-कहैत थेथर भऽ गेल मुदा ओ केकरो बात नइ मानलक।

(लखपतियाक पत्नी छिटकीवाली ओही बाटे जा रहल अछि। ओकरापर सबहक नजैर पड़ैत अछि।)

फुलचन- हे यौ, छिटकीवाली घर दिस जा रहल छइ। कहि दियौ ने जे तोहर हेरेलहा दिअर आबि गेलौ। अँगना नेने जेतइ।

भुनेसर- हँ यौ, ठीके कहै छिऐ। लखपतियाक पत्नी छिटकीवालीए छिऐ।

(छिटकीवाली मुँह घुमा कऽ देखैत अछि आ तेजीसँ विदा भऽ जाइत अछि।)

फुलचन- तखैनसँ कहै छेलौं तँ सुनबे ने केलिऐ।

भुनेसर- आब लेटरू काकाकेँ नेने जाए पड़तै।

लेटरू काका- ओ बाघ छिऐ जे हमरा खा लेतइ। चलू, बौकू, अहाँकेँ अँगना पहुँचा दइ छी।

(लेटरू काकाकेँ संगे बौकू प्रस्थान करैत अछि। पाछूसँ सभ विदा भऽ जाइत अछि।)

❑

सीन ड्रॉप।

तेसर दृश्य-

स्थान- लखपतियाक दरबज्जा।
(लखपतिया दुआरिपर बैसल अछि।)

छिटकीवाली- अहाँ दुआरिपर बैसल छिऐ आ ओनए अहाँपर काल बरिस रहल अछि।

लखपतिया- की भेलै? केतए काल बरिस रहल छइ?

छिटकीवाली- अहाँक हेरेलहा भाए भेट गेल। चाहक दोकानपर लेटरू काका आ फुलचन भैयाक संग फुसराहैट करैए।

लखपतिया- अँए, ई केना भेलइ!

छिटकीवाली- अहिना घरमे घेंसिया कऽ पड़ल रहू आ देखैत रहियौ। सभ सम्पैत बाँटि कऽ बेच-बिकैन देत।

लखपतिया- हम बुझै छिऐ। सभटा खेला फुलचनमाक लगौल छिऐ। अखैने तँ हमरासँ बकटेंटी केलक। ओनए खेला लगौने छल।

छिटकीवाली- कहैत रहै छी तँ बाते ने बुझैत रहै छिऐ। सभ दुश्मनी कऽ रहल अछि, अहाँसँ।

लखपतिया- अच्छा, अहाँ सिरिफ माएकेँ सम्हारने रहब। नहि होइए तँ ओकरा केतौ देसरठाम पठा दियौ। अहाँ अपना भाएकेँ कहियौ तैयार रहैले आ हमर लाठी नेने आउ। पहिने सोझा तँ आबए दियौ।

(लेटरू काका संगे बौकूक प्रवेश।)

लेटरू काका- यौ, अहाँक बौकू टीशनपर भेटल। बाटपर ठाढ़ भऽ कऽ अपने टोल दिस तकै छल। संगे नेने एलौं।

(बौकू गोड़ लगबाक लेल लखपतिया दिस बढ़ैत अछि। बौकूकेँ लखपतिया ठेल दैत अछि।)

लखपतिया- लगमे सँ हट। भाग ऐठामसँ।

बौकू- भैयाऽऽ। हम बौकू छी।

लखपतिया- फेर चुप, भाइक नाम नहिले। हम सभटा छल-प्रपंच बुझै छिऐ। दुश्मन सभ मिलि कऽ खेला लगौने अछि। हमर भाए तँ कहिया ने मरि गेल।

बौकू- एहेन बात नहि बाजू यौ भैया। अहाँक बड़ यादि आबै छल। माइक मोन पड़िते कलेजामे सान्हि मारए लगै छल। तँए भेँट करैले आबि गेलौं।

(एका-एकी फुलचन, कमलेश, भुनेसर आबि जाइत अछि।)

लखपतिया- रे धोखेबाज, हम सभटा बुझै छियौ। हमरा सम्पैतकेँ बाँटैले तोरा लाओल गेलौ। तूँ हमर भाए नहि बररूपिया छेँ। कहै छियौ, भागि जो हमरा सोझासँ।

लेटरू काका- हे यौ लाखोजी, सुनू ई अहींक भाए छी। पैछला गप्प आ गामक बितलाहा घटना सभक बारेमे पुछि लियौ। अपने पता लागि जाएत। ई तँ एक्सीडेन्टक कारणे चेहरा कनी बदलल छइ।

लखपतिया- हमरा सिखबै छी अहाँ। पैछला सभ बात बुझा-सुझा कऽ एकरा नाटक करबाक लेल अनने छिऐ।

लेटरू काका- हमरापर झूठ-फूसक दोख नहि लगाउ। भाए छी अहाँक आ बात सुनब हम।

लखपतिया- फेर, भाएबला बात बजिते छी।

बौकू- यौ भैया, रूपैआ चोरौने रहै अहाँक सार आ दगनीसँ दागि कऽ भगा देलिऐ हमरा। सेहो दाग हमरा देहपर अखनी तक अछि। बिसबास नइ होइए तँ देख लियौ।

(देह परहक दाग देखबैत अछि।)

लखपतिया- देखबै की। हमर भाए मरि गेल। ओकर अन्तिम क्रिया-करम कऽ देलिऐ।

(लखपतियाक माए दुखनी कानैत प्रवेश करैत अछि आ दौड़ कऽ बौकूसँ लिपैट जाइत अछि।)

दुखनी- रौ बौआ, रौ बौआऽऽऽ। एते दिन केतए रही रौ बौआ। कोन-कोन देवता-पितरकेँ कौबला केलिऐ रौ बौआऽऽऽ।
(बौकू आ दुखनी एक-दोसरसँ घेंट जोड़ि कऽ जार-बेजार कानि रहल अछि।)

बौकू- माए गै माएऽऽऽ। तोहर सुरता कहियो ने बिसरलियौ गइ। रहि-रहि कलेजामे सान्हि मारै छेलौ। तोरासँ भेँट करैले आबए पड़लौ। तोरासँ मिल लेलियौ। आब मनक सन्ताप मेटा गेल।

दुखनी- नहि रौ बौआ। आब तोरा केतौ नइ जाए देबौ रौ बौआ।

(लखपतिया हाथमे लाठी लैत छिटकीवालीकेँ इशारा करैत अछि।)

लखपतिया- छिटकीवाली, माएकेँ ऐठामसँ अँगना लऽ जाउ। ई बुढ़िया नाटक बेसी करैत अछि। घरमे बन्न कऽ कऽ एकरा मुँहकेँ थुड़ि दियौ। देखै छी की, एकरा घिसिया कऽ लऽ जाउ। आ लगाउ मुक्का-थप्पर।

(छिटकीवाली आगू बढ़ि दुखनीकेँ हाथ पकैड़ घिसियाबैत अँगना लऽ जाइत अछि।)

बौकू- (कानैत स्वरमे) हमरा कारणे माएकेँ नहि मारियौ। हम जा रहल छी। फेर कहियो घुमि कऽ एमहर नइ आएब। आइसँ हमर भैयारीक सम्बन्ध टुटि गेल।

(विदा भऽ जाइत अछि, मुदा फुलचन रोकैत अछि।)

फुलचन- तूँ धीरज राखह बौकू। एकरे मजाल छिऐ जे ई भाइक हिस्सा नइ देतै। पलिवारसँ भगा देतइ। आखिर समाज छै आकि नहि। अखैने हमरा उपदेश दऽ रहल छल आ अपना बेरमे बिसैर गेल।

बौकू- नहि यौ, आब हम नहि रहब। हम समाजकेँ परनाम करै छी। जखैन हमरा भाए हेरा गेल तँ सम्पैत आ हिस्सा लऽ कऽ की करबै। हम तँ अपना सहोदराकेँ तकैले आएल छेलौं। हमरा लेल चिन्ता नहि करू। बड़का दरबार हमरा लेल खुगल छइ।

अपना भऽ गेल सपना यौ

पराया भऽ गेल अपना यौ।

(तेजीसँ बौकूक प्रस्थान।)

(दुखनी अँगनासँ चिचियाइत अछि।

दुखनीक स्वरमे- बौआ रौऽऽऽ बौआऽऽऽ।

❑

सीन ड्रॉप।

समाप्त ।

पात्रक संग जीवन जीबैबला रचनाकारक बीच श्री राजदेव मण्डलजीक नाओं श्रद्धासँ लेल जाइत अछि। कथा, उपन्यास, कविता, नाटक, एकांकी इत्यादि सभ विधामे अपन विचार व्यक्त केनिहार रचनाकार राजदेव मण्डलजीक प्रस्तुत पोथी- 'वापसी' पढ़ि अहाँ स्वत: आधुनिक मैथिली साहित्यक दर्शन हेतु घुमि जाएब। -**उमेश मण्डल**

लेखक परिचय- नाओं- राजदेव मण्डल, जन्म : 15 मार्च 1960 ई.मे। पिता : स्व. सोनेलाल मण्डल उर्फ सोनाइ मण्डल। माता : स्व. फूलवती देवी। पत्नी : श्रीमती चन्द्रप्रभा देवी। पुत्र : निशान्त मण्डल, कृष्णकान्त मण्डल, विप्रकान्त मण्डल। पुत्री : रश्मि कुमारी। मातृक : बेलहा (फुलपरास, मधुबनी) मूलगाम : मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, भाया- निर्मली, जिला- मधुबनी। बिहार- 847452 मोबाइल : 9199592920 शिक्षा : एम.ए. द्वय (मैथिली, हिन्दी, एल.एल.बी) ई पत्र : rajdeokavi@gmail.com सम्मान : अम्बरा कविता संग्रह लेल 'विदेह' समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार वर्ष 2012क मूल पुरस्कार तथा समग्र योगदान लेल 'वैदेह' सम्मान- 2013 इस्वीमे प्राप्त। प्रकाशित कृति : (1) अम्बरा- कविता संग्रह (2010), (2) बसुंधरा कविता संग्रह (2013), (3) हमर टोल- उपन्यास (2013), (4) जाल- पटकथा (2015), (5) जल भँवर- उपन्यास (2017), (6) लाज- एकांकी (2017), (7) पंचैती- एकांकी (2017), (8) वापसी- एकांकी (2018)

तथा 'राजदेव प्रियंकर' नाओंसँ हिन्दीमे प्रकाशित कृति : (1) जिन्दगी और नाव- उपन्यास (1991), (2) पिंजरे के पंछी- उपन्यास (1994), (3) दरका हुआ दर्पण- उपन्यास (2001) अप्रकाशित कृति- (1) चाक (उपन्यास), (2) त्रिवेणीक रंग (लघु/बीहैन कथा संग्रह)।

₹ 50

9 789388 421881

पल्लवी प्रकाशन
जे.एल.नेहरू मार्ग, तुलसी भवन
निर्मली, सुपौल, बिहार : 847452